International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 68-72

प्रेमचंद और श्री लंका के लेखक मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में चित्रित नारियों की समस्याएँ

डॉ. आर. के. डी. निलंति कुमारी

राजपक्ष, ज्येष्ठ व्याख्याता, भाषा, संस्कृति एवं रंग कला अध्ययन विभाग, श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, गंगोडविल, नुगेगॉड, श्री लंका।

प्रस्तावना

प्रेमचन्द का समय सन् 1880 से सन् 1936 और मार्टिन विक्रमसिंह का समय सन् 1890 से सन् 1976 तक है। दोनों साहित्यकार अलग–अलग देशों से हैं फिर भी उनकी कहानियों में बहुत सी समानताएँ पाई जाती हैं। समकालीन होने के नाते दोनों कहानीकारों की विषयवस्तु पर तत्कालीन समस्याओं का प्रभाव पड़ा है।

प्रेमचन्द तथा मार्टिन विक्रमसिंह की स्त्रियों से संबंधित कहानियाँ कई प्रकार की हैं। विधवा–समस्याएँ, सास और बहू से संबंधित समस्याएँ तथा वैश्या जीवन से संबंधित समस्याएँ उनमें से प्रमुख हैं। नारियों से संबंधित अन्य, समस्याएँ भी हैं, फिर भी प्रस्तुत शोधकार्य में तुलनात्मक दृष्टि के आधार पर समस्याओं संबंधी शीर्षकों का चयन किया गया है।

विधवाओं की समस्याएँ

विधवाओं की दुर्दशा का चित्रण प्रेमचंद तथा मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में विद्यमान है। प्रेमचन्दं ने विधवाओं के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट की। 'सुभागी' कहानी में सुभागी का बाल विवाह हो गया और ग्यारह साल में ही वह विधवा भी हो गई। उस उम्र की बालिका को न विवाह का अर्थ मालूम है न ससुराल का अर्थ और न विधवा का अर्थ। समाज में फैले हुए बुरे रिवाजों के कारण ग्यारह वर्ष की बालिका का जीवन बरबाद हो गया। "घर में कुहराम मचा हुआ था। लक्ष्मी पछाड़े खाती थी। तुलसी सिर पीटते थे। उन्हें रोते देखकर सुभागी भी रोती थी। बार बार माँ से पूछती क्यों रोती हो अम्मी, मैं तुम्हें छोड़कर कहीं न जाऊँगी, तुम क्यों रोती हो?"[1] सुभागी जवान हो गई। दूसरा घर बसाने के लिए मना करते हुए वह चाचा हरिहर से कहती है कि– चाचा मैं तुम्हाारी बात समझ सकती हूँ, लेकिन मेरा मन घर करने को नहीं कहता। मुझे आराम की चिंता नहीं है। मैं सब कुछ झेलने को तैयार हूँ और जो काम तुम कहो वह सिर आँखों के बल करूँगी, मगर घर बसाने को मुझसे न कहो।"[2] सुभागी अपनी भाभी के कटुवचन सहती है। बाद में वह भाई के द्वारा बँटवारा करने पर माँ–बाप को लेकर अलग रहती है तथा दिन–रात परिश्रम करके अपने माता–पिता को वो समस्त सुख देती है जो उसका भाई मर्द होकर न दे सका। "गाँव में जहाँ देखो सबके मुँह से सुभागी की तारीफ़। लड़की नहीं देवी है। दो मर्दों का काम भी करती है, उस पर माँ–बाप की सेवा भी किये जाती है। सजनसिंह तो कहते, यह उस जन्म की देवी है।"[3] सुभागी ने अपने माँ–बाप को उनके पूरे जीवन में सुख शांति दी और मरने के बाद जो पूजा पाठ करना था वह भी सजनसिंह से कर्ज लेकर कर दिया। बाद में तीन साल तक सुभागी ने मेहनत से काम किया और पूरा कर्ज चुका दिया।

'धिक्कार' कहानी में प्रेमचन्द ने मानी के चरित्र के माध्यम से विधवाओं की दुर्दशा का चित्रण पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। पहले मानी के पिता की मृत्यु होती है। बाद में पति की मृत्यु होती है और मानी विधवा बन जाती है। विवाह के एक वर्ष के अंदर ही मानी अपने पति से शून्य हो गई। उसका सुहाग लुट गया। सब लोग समझते हैं कि उसके मनहूस होने के कारण ही पति की मृत्यु हो गई। मानी का अपने चाचा के सिवा और कोई नहीं था। वह अपने चाचा के पास गई। किंतु दो–चार महीने में ही मानी को मालूम हो गया कि इस घर में बहुत दिनों तक उसका निर्वाह न होगा। वह घर का सारा काम करती, पर चाचा और चाची दोनों उसे डाँटते और हमेशा गुस्सा रहते। भारतीय समाज में विधवाओं की छाया को भी अशुभ माना जाता है। उन्हें शुभ कार्यों में सम्मिलित नहीं होने दिया जाता। 'धिक्कार' कहानी में मानी अपनी चचेरी बहन की शादी का पहनावा देखने जाती है तो चाची से डाँट खाती है। चाची ने झिड़ककर कहा–"तुझे यहाँ किसने बुलाया था, निकल जा यहाँ से।"[4] सुहागिनों के मध्य विधवा का आगमन अशुभ माना जाता है। मानी अपने चाचा के चरण स्पर्श करती है तो उसके चाचा तिरस्कृत भाव से कहते हैं– "मुझे मत छू दूर रह, अभागिनी कहीं की।"[5] इस प्रकार पूरे समाज द्वारा तिरस्कावर करने के कारण मानी ने दुखी होकर अपने प्राण त्याग दिए।

विधवा की दयनीय दशा 'बेटों वाली विधवा' कहानी में देख सकते हैं। पंडित अयोध्यानाथ की पत्नी फूलमती की इच्छा तथा आज्ञा के बिना एक पत्ता भी न हिलता था। चालीस वर्ष की अवधि में फूलमती की बात सर्वमान्य थी। यहाँ तक कि पंडित अयोध्यानाथ भी अपनी पत्नी के कार्य में बाधा न करते थे। किंतु पंडित की मृत्यु के बाद परिस्थिति बदल गई। उसके बेटों ने फूलमती से जमीन, जायदाद, रुपए, गहने सभी छीन लिए। फूलमती के पुत्र उमाकांत का कहना है कि– "उमा ने निरीह भाव से कहा– कानून यही है कि बाप के मरने के बाद जायदाद बेटों की हो जाती है। माँ का हक केवल रोटी कपड़े का है।"[6] फूलमती अपनी बेटी कुमुद की शादी भी मन पसंद घर से नहीं कर सकती थी। वह पूरी तरह से बेसहारा बन गई। अब वह अपने घर में चारों बेटों और बहुओं की लौडी बनकर रहती है। तड़के उठती, कामकाज करती, दुखी जीवन बिताती। फूलमती का बड़ा हवादार कमरा भी खाली कराकर बड़ी बहू को दे दिया गया। उसे छोटी–सी कोठरी में भिखारिन की तरह जीवन व्यतीत करना पड़ा। अंत में फूलमती गंगा जल लेने गई और पाँव फिसल जाने से गंगा में डूबकर मर गई। यही विधवा की करुण दशा है।

---

[1] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खण्ड–1 (सुभागी), सुमित्र प्रकाषन, इलाहाबाद. (2008)पृ. 159

[2] वही, पृ.160

[3] वही, पृ.162

[4] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खण्ड–1 (धिक्कार), सुमित्र प्रकाषन, इलाहाबाद. (2008)पृ. 131

[5] वही, पृ.138

[6] कालिया, रवीन्द्र.(सं.), प्रेमचंद– स्त्री जीवन संबंधी कहानियाँ, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, (2012) पृ. 382

'बालक' कहानी की विधवा गोमती तीन–चार बार ब्याही जाने पर भी पति को छोड़कर भाग जाती है। विधवाश्रम से निकाली जाने पर वह एक कोठरी लेकर रहने लगती है, जहाँ से गंगू ब्राह्मण उसका उद्धार करते हैं। फिर वह गंगू को भी छोड़कर भाग जाती है। अस्पताल में उसका बच्चा होता है और गंगू उसे बच्चे सहित अपने घर ले जाते हैं। इस कहानी में गंगू एक उदार चरित्र है।

'माँ' कहानी में नायिका करुणा जब गर्भवती थी तब उसका पति जेल चला गया था। करुणा ने तब से मजूरी करके जीवन बिताया और अपने बालक प्रकाश को बड़ा किया। प्रकाश के तीन वर्ष के होने पर उसका पति जेल से आजादी पाकर आया और बीमारी के कारण उसकी मृत्यु हो गई। करुणा विधवा हो गई। उसने बहुत दुख झेलते हुए अपने बेटे को पाला–पोसा और बड़ा किया। बाद में बेटा उसे छोड़कर विलायत चला गया। करुणा अकेली हो गई। उसका पूरा जीवन अकेले ही बीत गया।

'ज्योति' कहानी में बूटी का चरित्र विधवाओं का एक और दृश्य प्रस्तुत करता है। पति की मृत्यु के बाद परिवार का सारा भार विधवा के सिर पर पड़ता है। कमाना, घर का कामकाज, बच्चों का पालन–पोषण आदि सारे कामों से पीड़ित विधवा का स्वभाव कटु हो जाता है। जब बहुत जी जलता तो अपने मृत पति को कोसती– आप तो सिधार गए, मेरे लिए वह सारा जंजाल छोड़ गए! जब इतनी जल्दी जाना था, तो ब्याह न जाने किसलिए किए। घर भूजी भाँग नहीं, चले थे ब्याह करने।"[7] पर बूटी का ह्रदय दयालु है। अपने बच्चों को बहुत प्यार करती है। अपने बड़े बेटे की शादी रूपा से तय करा देती है। बेटे की पसंद से ही शादी होती है।

'आधार' कहानी में मथुरा की विधवा पत्नी अनूपा अपनी ससुराल छोड़कर मायके नहीं जाना चाहती। अनूपा का भाई अपनी बहन की शादी के लिए जगह पक्की कर बहन को लिवा लाने आया। तब सास करुणा से विह्वल हो उठी और बोली– "बेटी, जहाँ जाओ वहाँ सुखी रहो। हमारे भाग्य ही फूट गए नहीं तो क्यों तुम्हें इस घर से जाना पड़ता। भगवान का दिया सब कुछ है, पर उन्होंने जो नहीं दिया उसमें अपना क्या बस! आज तुम्हारा देवर सयाना होता तो बिगड़ी बात बन जाती। तुम्हारे मन में बैठे तो इसी को अपना समझो, पालो–पोसो बड़ा हो जाएगा, तो सगाई कर दूँगी।"[8]

दूसरी ओर 'सती–2 में आने वाली मुलिया अपने पति कल्लू के कुरूप होते हुए भी उसको बहुत प्यार करती है। वह भी एक आदर्शवादी चरित्र है। मुलिया अपने पति के बीमार पड़ने के बाद मन लगाकर उसकी देखभाल करती है। कल्लू के मरने के बाद वह विधवा हो गई। कल्लू का चचेरा भाई राजा पहले से मुलिया के पीछे पड़ा था। मुलिया के विधवा होने के बाद राजा ने पूछा– तुम कब तक भैया के नाम को रोती रहोगी? ''मुलिया ने घृणा से उसकी ओर देखकर कहा– भैया नहीं रहे, तो क्या हुआ, भैया की याद तो है, उनका प्रेम तो है, उनकी सूरत तो दिल में है, उनकी बातें तो कानों में है। तुम्हारे लिए और दुनिया के लिए वह नहीं है, मेरे लिए वह अब भी वैसे ही जीते–जागते हैं। मैं अब भी उन्हें वैसे ही बैठे देखती हूँ।''[9]

समाज में इस प्रकार के सास–ससुर भी हैं जो अपनी विधवा बहू को अपनी बेटी की तरह देखभाल करते हैं। ऐसे भी ससुर हैं जो अपनी बहू को विधवा होने के बाद पहले से भी ज्यादा सम्मा न और जिम्मेतदारी देते हैं। 'स्वामिनी' कहानी में शिवदास ने भण्डारे की कुंजी अपनी बहू रामप्यारी के सामने फेंककर अपनी बूढ़ी आँखों में आँसू भरकर कहा– "बहू आज से गिरस्ती की देखभाल तुम्होरे ऊपर है। मेरा सुख भगवान से नहीं देखा गया, नहीं तो क्या जवान बेटे को यों ही छीन लेते।"[10]

इस प्रकार प्रेमचन्द ने विधवाओं की दुर्दशा पर ध्यान दिया साथ ही साथ विधवाओं के उद्धार की ओर भी ध्योन आकृष्ट किया है।

विधवा स्त्रियों की स्थिति के संबंध में भी मार्टिन विक्रमसिंह ने अपनी कहानियों में उल्लेख किया है। विशेष रूप से ग्रामीण समाज में रहने वाली विधवाओं की स्थिति कैसी है? 'मगुल गॅदर' कहानी में लमाहामि अपनी पूरी जिंदगी मेहनत करके अपनी बेटी की शादी के लिए पैसा इकट्ठा करती है। वह न खाती है और न पीती है। पर बेटी के लिए कोई कमी नहीं करती। हर माँ बाप की यही अभिलाषा होती है कि अपने बच्चों को पढ़ाए, लिखाए, अच्छी नौकरी मिले, अच्छे घर में शादी करवा दें आदि। इस प्रकार लमाहामि भी अपनी बेटी की शादी के लिए बहुत स्वरप्न देखती है और दिन–रात एक करके मेहनत करती है। अगर उसके पति होते तो लमाहामि की दशा ऐसी नहीं होती। शादी के दिन वर पक्ष की ओर से उसे कटु शब्द भी सुनना पड़ता है क्योंकि उसके पास दहेज में देने के लिए सोने का हार, मोती का हार, एक जोड़ी झुमका और दो तीन कपड़े के अलावा कुछ नहीं था।

मार्टिन विक्रमसिंह द्वारा विरचित 'मव' कहानी में माँ भी एक विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति का चित्रण है। वह भी दिन–रात मेहनत करके अपने बच्चों को पालती है और अंत में बीमार होकर मृत्यु को प्राप्त होती है।

> "खाना दो... मुझे भूख लगी है।
> ऐ भाई चिल्लाओ मत, माँ बीमार है। "[11]

माँ के बीमार होने के बाद बेटी अनुला अपना घर चलाने के लिए मेहनत करती है। रात में रस्सी बनाती है और कपड़े सिलती है। ये सब बाजार में बेचकर पैसा कमा लेती है और अपनी माँ की बीमारी दूर करने के लिए खर्च करती है। उनके रिश्तेदार भी उन लोगों को मदद नहीं करते। इस कहानी में माँ बहुत दयालु है। वह हमेशा दूसरों की मदद करती रहती थी। पर जब उन लोगों को मदद चाहिए तो मदद करने वाला कोई नहीं है। समाज में रहने वाले लोग ऐसे ही हैं। अपना काम हो जाने के बाद जब दूसरों की मदद करने का समय आया तब मुँह फेर लेते हैं। यही सामाजिक यथार्थ इस कहानी में है।

'मुदियान्से मामा' कहानी में कलुतर हामिने भी एक विधवा स्त्री है। वह हमेशा अपने भाई मुदियान्से पर विश्वास करती है। वह सोचती है कि उसका भाई उसकी बेटियों की शादी करा देगा। पर ऐसा नहीं हुआ। मालनी और सेपालिका कुँआरी बनकर घर में रहती हैं। अपने पति की मृत्यु के बाद कलुतर हामिने अपनी इज्जत बचाने के लिए बहुत मेहनत करती है। वह दिन–प्रतिदिन गरीब होती जाती है। इस प्रकार लमाहामि, माँ और कलुतर हामिने विधवा होने के कारण बहुत दुखी जीवन बिताती हैं।

अनमेल विवाहः

भारतीय समाज में दिखने वाली एक अन्य समस्या अनमेल विवाह है। अनमेल विवाह कई कारणों से हो सकता है। मुख्य रूप से दहेज प्रथा के कारण अनमेल विवाह होता है। अनमेल विवाह के कारण औरत का पूरा जीवन बर्बाद होता है। 'उद्धार' कहानी में प्रेमचन्द ने अनमेल विवाह के संबंध में अपने विचार इस प्रकार

---

[7] कालिया, रवीन्द्र.(सं.), प्रेमचंद– स्त्री जीवन संबंधी कहानियाँ, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, (2012) पृ. 123

[8] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खण्ड–1 (आधार), सुमित्र प्रकाषन, इलाहाबाद. (2008)पृ. 493

[9] कालिया, रवीन्द्र.(सं.), प्रेमचंद– स्त्री जीवन संबंधी कहानियाँ (सती2), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, (2012) पृ. 157

[10] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खण्ड–1 (स्वामिनी), सुमित्र प्रकाषन, इलाहाबाद. (2008)पृ. 72

[11] विक्रमसिंह, मार्टिन, गॅहॅनियक सह तवत् कता (मव), सी.स. सरस समागम, राजगिरिय. (2011), पृ. 64

व्यक्त' किए हैं– "हिंदू समाज की वैवाहिक प्रथा इतनी दूषित, इतनी चिंताजनक, इतनी भयंकर हो गई है कि कुछ समझ में नहीं आता, उसका सुधार क्योंकर हो।"[12]

हिंदू समाज में परिवार में लड़की पैदा होना एक बोझ जैसा माना जाता है। लड़की पैदा होते ही माँ–बाप चिंता में पड़ जाते हैं कि उसकी शादी कैसे होगी। शादी जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है। लड़की–लड़के की इच्छा के अनुसार शादी होनी चाहिए। 'उद्धार' कहानी में हजारीलाल क्षय रोग से पीड़ित है। कन्या के पिता को हजारीलाल इसके संबंध में बता देता है। पर लड़की अम्बाह के पिता यह शादी रोकना नहीं चाहते। हजारीलाल सोचता है कि– "क्या यह विवाह है? कदापि नहीं। यह तो लड़की को कुँए में डालना है, भाड़ में झोंकना है, कुंद छुरे से रेतना है। कोई यातना इतनी दुस्सह, इतनी हृदयविदारक नहीं हो सकती जितनी वैधव्य, और ये लोग जानबूझ कर अपनी पुत्री को वैधव्य के अग्नि कुंड में डाल देते हैं। यह माता–पिता हैं? कदापि नहीं। ये लड़की के शत्रु हैं, कसाई हैं, बधिक हैं, हत्यारे हैं। क्याय इनके लिए कोई दंड नहीं? जो जान–बूझकर अपनी प्रिय संतान के खून से अपने हाथ रंगते हैं, उसके लिए कोई दंड नहीं? समाज भी उन्हें दंड नहीं देता, कोई कुछ नहीं करता। हाय!"[13]

'नरक का मार्ग' में नायिका अनमेल विवाह से पीड़ित है। उसका हृदय बूढ़े पति को देखकर चीत्कार कर उठता है। वह अपने आप सोचती है कि– "भगवान! मैं अपने मन को कैसे समझाऊँ। तुम अन्तरर्यामी हो, तुम मेरे रोम–रोम का हाल जानते हो। मैं चाहती हूँ कि उन्हें अपना इष्ट समझूँ, उनके चरणों की सेवा करूँ, उनके इशारे पर चलूँ, उन्हें मेरी किसी बात से, किसी व्यवहार से नाममात्र भी दुःख न हो। वह निर्दोष है, जो कुछ मेरे भाग्य में था वह हुआ, न उनका दोष है, न माता–पिता का, सारा दोष मेरे नसीबों ही का है।"[14] वह अपने आप में खुश रहने की कोशिश करती है। पर हमेशा उदास ही रहती है। वह अपने पति को बीमार पड़ता देखकर दुःखी नहीं होती। अंत में पति की मृत्यु पर वह खुश हो जाती है। "आज तीन दिन हुए, मैं विधवा हो गई, कम से कम लोग यही कहते हैं। जिसका जो जी चाहे करे, पर मैं अपने को जो कुछ समझती हूँ वह समझती हूँ। मैंने चूड़ियाँ नहीं तोड़ीं, क्यों तोड़ूँ? माँग में सेंदूर पहले भी न डालती थी, अब भी नहीं डालती।"[15]

इस प्रकार अनमेल विवाह के कारण कहानी की नायिका को अपने वैवाहिक जीवन का कोई सुख नहीं मिला। प्रेमचन्द ने एक और कहानी 'कुसुम' में भी अनमेल विवाह का दुष्परिणाम बताया है। 'कुसुम' कहानी में नायिका कुसुम की शादी होती है। उसका गौना हुए एक साल हो रहा है। इसी बीच में तीन बार वह ससुराल गई, पर उसका पति उससे बोलता ही नहीं। अब उसके पति का दूसरा विवाह भी होने वाला है। कुसुम रो–रो कर समय बिताती है। परंतु पति के निर्दयी व्यवहार का कारण कोई नहीं जानता। बाद में पता चला कि उसने विवाह इसलिए किया कि ससुर जी के पैसे से विलायत पढ़ने जा सके। पति के शब्द देखिए– "यथार्थ यह है कि इस विवाह से मेरी वह अभिलाषा न पूरी हुई, जो मुझे प्राणों से भी प्रिय थी। मैं विवाह पर रजामंद न था, अपने पैरों में बेड़ियाँ न डालना चाहता था, किंतु जब महाशय नवीन बहुत पीछे पड़ गए और उनकी बातों से मुझे यह आशा हुई कि वह सब प्रकार से मेरी सहायता करने को तैयार हैं, तब मैं राजी हो गयाय पर विवाह होने के बाद उन्होंने मेरी बात न पूछी। मुझे एक पत्र भी न लिखा कि कब तक वह मुझे विलायत भेजने का प्रबंध कर सकेंगे।"[16] यह बात सुनकर कुसुम बहुत दुःखी हुई। कुसुम के माता–पिता उसके पति को विलायत भेजना चाहते थे पर कुसुम का मन टूट गया। उसने सोचा कि ऐसे स्वार्थी पति के साथ मैं जीवन भर कैसे रहूँ। उसने स्वपतंत्र रूप से रहने का निश्चय कर लिया। इस प्रकार अनमेल विवाह के कारण अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यह यथार्थ प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में दर्शाया है।

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में अनमेल विवाहों का चित्रण नहीं हुआ है। इसका कारण यह हो सकता है कि श्री लंका में अनमेल विवाहों का प्रचलन कम हो।

सास और बहू से संबंधित समस्याएँ

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में सास और बहू से संबंधित समस्याएँ भी चित्रित कीं। कन्या विवाह के पश्चात ससुराल में रहती है। कन्या का ससुराल सुखपूर्ण भी हो सकता है और दुःखपूर्ण भी। कुछ लोग विशेष रूप से गाँव के लोग बहू के घर पर कदम रखते ही घर का समस्त कामकाज उसपर छोड़ देते हैं। इसके अलावा कोई भी गलती हो जाए तो डाँट खानी पड़ती है। सास एक शासक के रूप में बहू पर शासन करती है। 'स्वर्ग की देवी' कहानी में सीतासरण की माँ अपनी बहू लीला के साथ बहुत बुरा व्यवहार करती है लेकिन लीला सबकुछ सह लेती है। वह अपने पति को बहुत प्यार करती है। सीतासरन को पता है कि उसकी पत्नी बहुत दुःख झेलती है। वह पत्नी से कहता है कि– ''तुम्हें इस घर में आकर बहुत दुःख सहना पड़ा। यह घर तुम्हारे योग्य न था। तुमने पूर्व जन्म में जरूर कोई पाप किया होगा। लीला ने पति के हाथों से खेलते हुए कहा, 'यहाँ न आती तो तुम्हारा प्रेम कैसे पाती?"[17]

'घासवाली' कहानी में मुलिया भी अपनी सास से पीड़ित है। मुलिया के पीछे गाँव के ठाकुर चैनसिंह के आने के कारण वह घास काटने जाना नहीं चाहती। पर उसकी सास घर में रहने नहीं देती। सास कहती है कि–''... तो यहाँ मेरे घर में रानी बन के निबाह न होगा। किसी को चाम नहीं प्यार होता, काम प्यारा होता है। तू बड़ी सुंदर है, तो तेरी सुंदरता लेकर चाटूँ? उठा झाबा और घास ला।"[18]

'शांति–2' कहानी में श्यामा भी ससुराल में कष्ट उठाती है। वह कहती है कि– ''मेरी सास और ननद मेरे बनाव श्रृंगार पर नाक भौं सिकोड़तीं पर मुझे अब उनकी परवाह न थी। बाबू जी की प्रेम–परिपूर्ण दृष्टि के लिए ये झिड़कियाँ भी सह सकती थी।''[19]

इस प्रकार ससुराल में बहुओं को बहुत कष्ट झेलने पड़ते हैं। कभी–कभी बहू की व्यंग्यपूर्ण बातें सास को भी सुननी पड़ती हैं। 'पंच परमेश्वर' कहानी में जुम्मवन शेख अपनी बूढ़ी मौसी (खालाजान) की जायदाद अपने नाम करवाने तक उनकी अच्छी तरह देखभाल करते हैं। बाद में जुम्मान की पत्नी करीमन रोटियों के साथ कड़वी बात भी कहती है। ''बुढ़िया न जाने कब तक जियेगी। दो–तीन बीघे ऊसर क्यार दे दिया, मानो मोल ले लिया है। बघारी दाल के बिना रोटियाँ नहीं उतरतीं! जितना रुपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से तो अब तक गाँव मोल ले लेते।''[20]

प्रेमचन्द ने कुछ कहानियों में स्त्रियों के गुणों की प्रशंसा की है। 'बड़े घर की बेटी' उनकी बहुचर्चित कहानी है। इसमें नायिका

---

[12] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खण्ड–1 (उद्धार), सुमित्र प्रकाषन, इलाहाबाद. (2008)पृ. 462

[13] वही, पृ.467

[14] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खण्ड–1 (उद्धार), सुमित्र प्रकाषन, इलाहाबाद. (2008)पृ. 453

[15] वही, पृ.455

[16] कालिया, रवीन्द्र.(सं.), प्रेमचंद– स्त्री जीवन संबंधी कहानियाँ (कुसुम), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, (2012) पृ. 147

[17] कालिया, रवीन्द्र.(सं.), प्रेमचंद– स्त्री जीवन संबंधी कहानियाँ (स्वर्ग की देवी), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, (2012) पृ. 230

[18] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खण्ड–1 (घासवाली), सुमित्र प्रकाषन, इलाहाबाद. (2008)पृ. 191

[19] कालिया, रवीन्द्र.(सं.), प्रेमचंद– स्त्री जीवन संबंधी कहानियाँ (शांति2), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, (2012) पृ. 111

[20] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खण्ड–2 (पंच परमेष्वर), सुमित्र प्रकाषन, इलाहाबाद. (2008)पृ. 482

आनंदी अपने धैर्य, सहनशीलता और गांभीर्य से परिवार को टूटने से बचा लेती है। उसी संदर्भ में आनंदी के ससुर कहते हैं– ''बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।''[21] इस कहानी की आनंदी आदर्शवादी चरित्र है।

इस प्रकार प्रेमचन्द ने पारिवारिक समस्याओं पर ध्यान दिया और तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रित किया।

मार्टिन विक्रमसिंह द्वारा विरचित 'उपासकम्मा' कहानी के 'तिलिस्हामि' सास का नाम है। तिलिस्हामि पैसा बचाती है, सामान इकट्ठा करती है, पर कभी इन सामानों का प्रयोग नहीं करती। तिलिस्हामि घर में खाना बनाने के लिए नारियल तक नहीं देती। इससे बहू और बेटा दोनों पीड़ित है। वे लोग हमेशा गरीबों की तरह जीते थे। तिलिस्हामि की मृत्यु के बाद पूरे घर में ढूँढने पर बहुत सारा सोना, पैसे आदि मिले। अब उन पैसों से क्या मतलब है। जब वह जीती थी तब बहुत दुखपूर्ण जीवन बिताती थी।

मार्टिन विक्रमसिंह ने समाज में रहने वाली स्त्रियों से संबंधित एक नई दृष्टि 'लेलि' कहानी में प्रस्तुत की। लेलि का अर्थ है बहू। लड़कियाँ शादी होने के बाद बहू बनकर अपने पति के घर जाती हैं। पति के घर जाने के बाद बहुओं को अनेक कष्टों को सामना करना पड़ता है। सास और ननद बहू की गलतियाँ निकालती हैं। 'लेलि' में आने वाली बहू यानि सॉमिनोना भी अपनी ससुराल में पीड़ित है। ननद हमेशा उसको डाँटती है। सास नहीं है। पर ससुर अपनी बहू को बहुत प्यार करता है। अंत में ससुर अपनी जायदाद भी बहू के नाम कर देता है। ननद ये सब बरदाश्तत नहीं कर सकती। वह हमेशा अपनी भाभी की निंदा करती है। ''तूने झूठ बोलकर मेरे पिता जी को जाल में फँसा के सब जायदाद अपने नाम करवा ली। तू जा चुड़ैल।''[22]

सॉमिनोना के पति जिनपाल और ससुर सॉमिनोना के बारे में बहुत दुःखी हुए। बाद में सॉमिनोना ने अपने ससुर की देखभाल करना भी छोड़ दिया। वह भी एक तरह से दुष्ट और मतलबी बहू है। पहले अपने ससुर का दिल जीतकर जायदाद लिखवा ली और बाद में देख–रेख करना छोड़ दिया। पहले की तरह खाना–वाना नहीं बनाती, ख्याल भी नहीं रखती। सॉमिनोना और गुणवती के चरित्रों के आधार पर बहू और ननद दोनों के चरित्रों पर प्रकाश डाला गया है।

वैश्या जीवन से संबंधित समस्याएँ

प्रेमचन्द तथा मार्टिन विक्रमसिंह ने वैश्यांओं से संबंधित कई कहानियों की रचना की। इन कहानियों के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश की है कि वैश्या भी समाज में रहने वाली औरत है। उसको भी इतनी इज्जत मिलनी चाहिए जितनी कुलीन औरतों को मिलती है। पर समाज ऐसा नहीं करता। समाज में रहने वाले लोग वेश्या को नीची नजर से देखते हैं। केवल वैश्या ही नहीं उनकी संतान भी इसका फल भोगती है। हो सकता है कि अपना जीवन चलाने के लिए वेश्या के पास कोई और मार्ग न हो या किसी अन्य कारण से वैश्या बन गई हो। वैश्या भी अपना इस प्रकार का जीवन पसंद नहीं करती। वह भी चाहती है कि इस जीवन से बच जाय और वह उसके लिए कोशिश भी करती है। प्रेमचंद द्वारा विरचित 'वैश्या' कहानी में माधुरी सिंगार सिंह को चिट्टी लिखते हुए अपने विचार इस प्रकार प्रकट करती है– ''सरदार साहब! मैं आज कुछ दिनों के लिए यहाँ से जा रही हूँ, कब लौटूँगी, कुछ नहीं जानती। कहाँ जा रही हूँ, यह भी नहीं जानती। जा इसलिए रही हूँ कि इस बेशर्मी और बेहयाई की जिंदगी से मुझे घृणा हो रही है और घृणा हो रही है उन लम्पिटों से, जिनके कुत्सित विलास का मैं खिलौना थी और जिनमें तुम मुख्य हो। तुम महीनों से मुझ पर सोने और रेशम की वर्षा कर रहे हो, मगर मैं तुमसे पूछती हूँ, उससे लाख गुने सोने और दस लाख गुने रेशम पर भी तुम अपनी बहन या स्त्री को इस रूप के बाजार में बैठने दोगे? कभी नहीं। उन देवियों में कोई ऐसी वस्तु है, जिसे तुम संसार भर की दौलत से भी मूल्यवान समझते हो।''[23]

इसी प्रकार 'आगा पीछा' कहानी में कोकिला भी अपने इस कलुषित जीवन से दुःखी है और इस जीवन से मुक्त' होना चाहती है। वह कहती है कि– ''हाय! मैंने संसार में जन्म ही क्यों लिया? उसने दान और व्रत से उन कालिमाओं को धोने का प्रयत्न किया और जीवन के बसंत की सारी विभूति इस निष्फल प्रयास में लुटा दी।''[24] कोकिला उस जीवन से मुक्त होना चाहती है। अपनी बेटी श्रद्धा को वह दाग न लगने देना चाहती है। वह सोचती है– "क्या यह पावन ज्योति भी वासना के प्रचंड आघातों का शिकार होगी? मेरे प्रयत्न–निष्फल हो जायेंगे? आह! क्या कोई ऐसी औषधि नहीं है, जो जन्मो के संस्कारों को मिटा दे?''[25] श्रद्धा बहुत सुशील, भोली–भाली, सगर्व, शांत, लज्जासशील लड़की थी। पढ़ने में भी होशियार थी जिनके साथ वह पढ़ती थी वे उससे बात भी न करना चाहती थीं। विद्यालय में बड़े घर की लड़कियाँ उसके साथ रहने में अपना अपमान समझती थीं क्योंकि वह वैश्या की बेटी थी। एक दिन विद्यालय में हुए समारोह में श्रद्धा ने भाषण दिया। यह सुनकर लोग तरह–तरह की बातें करने लगे।

"काले नवयुवक ने कुछ तेज होकर कहा–

आपको ऐसी बातें मुँह से निकालते लज्जा भी नहीं आती।

दूसरे व्यबक्ति ने कहा 'लज्जा की कौन बात है जनाब? वैश्या की लड़की अगर वैश्या हो, तो आश्चेर्य की क्या बात है?

नवयुवक ने घृणापूर्व स्वर में कहा– ठीक होगा, आप जैसे बुद्धिमान व्यक्तियों की समझ में! जिस रमणी के मुख से ऐसे विचार निकल सकते हैं, वह देवी है, रूप को बेचनेवाली नहीं।"[26] भगतराम और श्रद्धा के बीच में प्रेम संबंध होते हैं। भगतराम अपने माँ बाप के सामने अपनी इच्छा प्रकट करते हैं। तब भगतराम के पिता चौधरी का कहना है– "हम तो गँवार आदमी हैं, पर समझ में नहीं आता कि तुम्हारी यह नियत कैसे हुई? रण्डी की बेटी चाहे जन्नम की परी हो, तो भी रण्डी की बेटी है। हम तुम्हारा विवाह यहाँ न होने देंगे। अगर तुमने विवाह किया, तो हम दोनों तुम्हाहरे ऊपर जान दे देंगे।"[27] इस प्रकार कोकिला के जीवन का असर श्रद्धा के जीवन पर पड़ता है। इस प्रकार प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्पष्ट किया है कि वैश्याओं की दुरावस्था का दोष अधिकतः समाज के ऊपर ही है। समाज के कारण ही वे बेसहारा होती हैं। वे हमेशा अपना उद्धार चाहती हैं। कभी–कभी वे आत्माहत्या कर लेती हैं। 'वैश्या' कहानी में माधुरी अंत में आत्महत्या कर लेती है।

मार्टिन विक्रमसिंह द्वारा विरचित 'पउकारयाट गल गॅसीम' कहानी में मार्टिन विक्रमसिंह ने समाज के एक दूसरे यथार्थ को प्रकट किया है। मनुष्य समाज में सभी लोगों से गलती हो जाना स्वाभाविक है। गलती न करने वाला आदमी इस दुनिया में अभी तक पैदा ही नहीं हुआ। समाज में प्रायः लोग अपनी गलतियों पर ध्यान नहीं देते। लेकिन दूसरों की छोटी–मोटी गलतियों पर ध्यान देते हैं और उनके

---

21 प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खण्ड–1 (बड़े घर की बेटी), सुमित्र प्रकाषन, इलाहाबाद. (2008)पृ. 481

22 विक्रमसिंह, मार्टिन, हदँ साकि कीम, सी.स. सरस समागम, राजगिरिय. (2012), पृ. 13

23 कालिया, रवीन्द्र.(सं.), प्रेमचंद– स्त्री जीवन संबंधी कहानियाँ (वैष्या), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, (2012) पृ. 82

24 प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खण्ड–1 (आगा–पीछा), सुमित्र प्रकाषन, इलाहाबाद. (2008)पृ. 723

25 वही, पृ.723

26 प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खण्ड–1 (आगा–पीछा), सुमित्र प्रकाषन, इलाहाबाद. (2008)पृ. 725

27 वही, पृ.730

बारे में बढ़ा–चढ़ाकर विचार भी कर लेते हैं। समाज में वेश्या का क्याप स्थान है, मार्टिन विक्रमसिंह ने समाज का ध्यान इस कहानी के माध्यम से

आकृष्ट किया। एक स्त्री क्यों वैश्या बनती है, इसका कारण बहुत करुण कथा हो सकती है पर सब लोग उस स्त्री की निंदा करते हैं।

''तुम जैसी औरत पूरी स्त्री जाति के लिए कलंक है।''

उतर जा बस से तुझ जैसी औरत सिंहली जाति का नाश करती है।''[28]

उपर्युक्त शब्द गर्भवती वैश्या स्त्री को कहे गए। समाज में रहने वाले लोग ऐसी स्त्रियों के बारे में क्या सोचते हैं, यह ऊपर के संवाद से स्पष्ट है। वह स्त्री प्रसव पीड़ा से तड़पती है। तब भी किसी की सहानुभूति इस औरत पर नहीं है। क्यों कि समाज पहले से ही उस स्त्री को पापी मानता है पर समाज को तनिक भी सुध नहीं है कि वह एक गर्भवती स्त्री है। माँ बनने वाली है। बस से उतरवा देंगे तो उसका क्या होगा? सब लोग डाँटने लगे जैसे उन्होंने कभी कोई गलती नहीं की। समाज में रहने वाले लोग वेश्या की ओर बुरी नज़र से देखते हैं। पर उन्हीं में से कुछ लोग वैश्या के पास जाते हैं और अपना शौक पूरा करते हैं। पर बाद में निन्दा करते हैं। मार्टिन विक्रमसिंह यही संदेश देना चाहते हैं कि वेश्या भी एक माँ है, वह भी समाज का एक हिस्सा है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद एवं मार्टिन विक्रमसिंह द्वारा विरचित विधवाओं की संमस्याओं से संबंधित कहानियों की तुलना में यह तथ्य उभर आता है कि मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में विधवाओं की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण हुआ है, जबकि प्रेमचंद की कहानियों में विधवा की दयनीयता के चित्रण के साथ–साथ उनके प्रति सुधारवादी भावना का भी अस्तित्व है। मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में अनमेल विवाहों का चित्रण नहीं हुआ है। इसका कारण श्री लंका में अनमेल विवाहों का प्रचलन कम होना हो सकता है। सास और बहू से संबंधित संमस्याओं तथा वैष्याओं की समस्याओं के चित्रण में प्रेमचंद और मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में मार्मिकता के साथ–साथ सुधारवादी भावना भी अंतर्निहित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कालिया, रवीन्द्र.(सं.), (2012), प्रेमचंद– स्त्री जीवन संबंधी कहानियाँ, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन.
2. प्रेमचंद, (2008), प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–1, इलाहाबाद, सुमित्र प्रकाशन.
3. प्रेमचंद, (2008), प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–2, इलाहाबाद, सुमित्र प्रकाशन.
4. प्रेमचंद, (2011), मानसरोवर– भाग एक से आठ तक, नयी दिल्ली, स्टार पब्लिकेशनस.
5. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), कता अहुर, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम.
6. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2011), गॅहॅनियक सह तवत् कता, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम.
7. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), तोरागत केटि कता1, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम.
8. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), पवुकारयाट गल् गॅसीम, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम.
9. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), मगुल गेदर, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम.
10. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), हदँ साक्कि कीम, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम.
11. प्रेमचंद,मार्टिन विक्रमसिंह, कहानी, नारियों की समस्यााएँ.

---

28 विक्रमसिंह, मार्टिन. पवुकारयाट गल् गॅसीम, सी.स. सरस समागम, राजगिरिय, (2012), पृ. 97